date 10/4/20
hindu
wrote in fair notebook and
learn

पाठ्यपुस्तक (क्षितिज भाग–2) के प्रश्नोत्तर

1 फ़ादर की उपस्थिति देवदार की छाया जैसी क्यों लगती थी? **CBSE 2012, 11**

उत्तर देवदार की छाया शीतल और मन को शांत करने वाली होती है। फ़ादर लेखक और उसके साथियों के हँसी-मज़ाक में निर्लिप्त शामिल रहते, गोष्ठियों में गंभीर बहस करते तथा उनकी रचनाओं पर बेबाक राय देते। घरेलू उत्सव और संस्कार में बड़े भाई और पुरोहित जैसे खड़े होकर आशीषों से भर देते। इसी कारण लेखक को फ़ादर की उपस्थिति देवदार की छाया जैसी लगती थी।

2 फ़ादर बुल्के भारतीय संस्कृति के एक अभिन्न अंग हैं, किस आधार पर ऐसा कहा गया है? **CBSE 2012, 11**

उत्तर फ़ादर बुल्के को भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग इसलिए कहा गया है, क्योंकि वे बेल्जियम से भारत आकर यहाँ की संस्कृति में पूरी तरह रच-बस गए थे। वे सदा यह बात कहते थे कि अब भारत ही मेरा देश है। भारत के लोग ही उनके लिए सबसे अधिक आत्मीय थे। वे भारत की सांस्कृतिक परंपराओं को पूरी तरह आत्मसात् कर चुके थे।

फ़ादर ने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए बहुत से प्रयास किए तथा हिंदी की समृद्धि के लिए 'ब्लू-बर्ड' तथा 'बाइबिल' का हिंदी रूपांतरण भी किया। वे भारतीय संस्कृति के अनुरूप ही वसुधैव कुटुंबकम की भावना से ओतप्रोत थे।

3 पाठ में आए उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए, जिनसे फ़ादर बुल्के का हिंदी प्रेम प्रकट होता है।

उत्तर फ़ादर बुल्के को हिंदी से बहुत प्रेम था। उन्होंने 'रामकथा : उत्पत्ति और विकास' विषय पर शोधप्रबंध हिंदी में ही लिखा तथा प्रसिद्ध 'अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश' तैयार किया। उनकी चिंता हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने की थी। वह हर मंच से इसके लिए अकाट्य (जिसे काटा न जा सके) तर्क देते थे। उन्हें इस बात पर दुःख होता था कि हिंदी वाले ही हिंदी की उपेक्षा करते हैं। प्रस्तुत प्रसंग उनके हिंदी प्रेम को प्रकट करते हैं।

4 इस पाठ के आधार पर फ़ादर कामिल बुल्के की जो छवि उभरती है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर *प्रस्तुत पाठ के आधार पर फ़ादर कामिल बुल्के की निम्न छवि उभरती है*

(*i*) फ़ादर कामिल बुल्के विदेशी होते हुए भी सच्चे अर्थों में एक भारतीय थे। वे भारत को ही अपना देश मानते थे।

(*ii*) फ़ादर में सभी के लिए ममता और वात्सल्य भाव कूट-कूटकर भरा हुआ था। वे एक बार जिससे रिश्ता जोड़ लेते थे, उसे तोड़ते नहीं थे।

(*iii*) फ़ादर को भारतीय भाषा, संस्कृति और साहित्य से बहुत प्रेम था।

(*iv*) फ़ादर बुल्के अपने स्नेहजनों के व्यक्तिगत सुख-दुःख का हमेशा ध्यान रखते थे। उनके सांत्वना भरे शब्दों से लोगों का हृदय प्रकाशित हो उठता था। अपने व्यक्तित्व की महानता के कारण ही वे सभी की श्रद्धा के पात्र थे।

(*v*) फ़ादर बुल्के हिंदी के प्रकांड विद्वान् थे एवं हिंदी के उत्थान के लिए सदैव तत्पर रहते थे।

5 लेखक ने फ़ादर बुल्के को 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' क्यों कहा है? **CBSE 2012, 11**

उत्तर लेखक ने फ़ादर बुल्के को 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' इसलिए कहा है, क्योंकि फ़ादर बुल्के ने अपना जीवन सदैव दूसरों की भलाई में लगाया। उनके मन में दूसरों के लिए हमेशा प्यार तथा ममता छलकती रहती थी, जो हर किसी में केवल अपने प्रियजन के लिए होती है। वे सबके साथ एक पारिवारिक रिश्ते में बँध जाते थे। वे कभी क्रोध या आवेश में नहीं आते थे। वे लोगों के सुख-दुःख में शामिल होकर उनके प्रति सहानुभूति प्रकट करते थे तथा उन्हें सांत्वना भी देते थे।

6 फ़ादर बुल्के ने संन्यासी की परंपरागत छवि से अलग एक नई छवि प्रस्तुत की है, कैसे? **CBSE 2015, 12**

उत्तर प्रायः संन्यासी सांसारिक मोह-माया से दूर रहते हैं, जबकि फ़ादर ने ठीक उसके विपरीत छवि प्रस्तुत की है। परंपरागत संन्यासियों की परिपाटी का निर्वाहन न कर, वे सबके सुख-दुःख में शामिल होते थें। एक बार जिससे रिश्ता बना लेते; उसे कभी नहीं तोड़ते। सबके प्रति अपनत्व, प्रेम और गहरा लगाव रखते थे। लोगों के घर आना-जाना उनका नित्य प्रति का काम था। इस आधार पर कहा जा सकता है कि फ़ादर बुल्के ने संन्यासी की परंपरागत छवि से अलग छवि प्रस्तुत की है।

7 *आशय स्पष्ट कीजिए*

(क) नम आँखों को गिनना स्याही फैलाना है। **CBSE 2014, 11**

(ख) **HOTS** फ़ादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है। **CBSE 2011**

उत्तर ***(क)*** लेखक ने फ़ादर की मृत्यु पर लोगों के दुःख का वर्णन करते हुए कहा है कि उनकी मत्यु पर दुःखी होने वाले लोगों की कमी नहीं थी। अब उन नम आँखों को गिनना स्याही फैलाने के बराबर है अर्थात् उन्हें गिनने से कोई परिणाम नहीं निकलना है, क्योंकि वे अनगिनत हैं।

(ख) प्रस्तुत पंक्ति का आशय है कि जिस प्रकार एक उदास शांत संगीत को सुनते समय हमारा मन गहरे दुःख में डूब जाता है, वातावरण में एक अवसाद भरी निस्तब्ध शांति छा जाती है और हमारी आँखें अपने आप ही नम हो जाती हैं, ठीक वैसी ही दशा फ़ादर बुल्के को याद करते समय हो जाती है।